मानवतावाद एवम् अण्णा भाऊ साठे

प्रा. छाया गुलाबराव जाधव

श्रीमती सु.रा.मोहता महिला महाविद्यालय, खामगांव.

अण्णा भाऊ साठे डेढ दिन पाठशाला में जानेवाले ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे कि जिन्होंने साहित्य की अधिकांश विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई इतना ही नही''तो उन्होंने अनेक क्षेत्रों में अपना सक्रिय योगदान दिया,जैसे कामगार,कवी, लोकशाहीर कहानीकार, उपंत्यासकार, नाटककार, आंदोलनों में काम करनेवाले कार्यकर्ता,लोकनाट्य के जनक,प्रतिभावंत कलाकार,नायक और सबसे महत्वपूर्ण बात है—मनु य तथा मानवीय जीवन पर प्रेम करनेवाला व्यक्ती इस प्रकार भाऊ ने अपने साहित्य के माध्यम से समाजपरिवर्तन एवं समाजप्रबोधन का कार्य किया हैएसर्वसामान्य उपेक्षित मनु यों की वेदनाओ को वाणी देने का कार्य किया है,पग—पग पर मानवतावादी दृ ि ट का परिचय दिया है।कार्लमार्क्स,का प्रभाव होने के कारण उन्होंने ोि ातों की स्थिति में सुधारणा करने हेतू अपने साहित्य के माध्यम से विद्रोही नायक खडे किए जैसे,' फकिरा'उपन्यास का नायक फकिरा.विद्रोही नायक का प्रतिनिधित्व करता है।कम्युनिस्ट पार्टी एवं किसान सभा के प्रसार—प्रचार के लिए अनेक लोकनाट्यों का सृजन किया। लोकनाट्य के माध्यम से किसान तथा कामगार वर्ग के जीवन वि ायक समस्याओं पर प्रकाश डाला गया। इस तरह डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के समाजवादी विचारों को आगे बढाने का भी कार्य किया है।

अण्णाभाऊ ने ३५ उपन्यास, १५ पोवाडे (लोकगीत प्रकार) १४ लोकनाट्य, १३ कहानी सग्रंह और १ यात्रावृत्तांत,१२ फिल्मों की पटकथाओं का लेखन,१२१ तमाशों का लेखन व लावणी इत्यादी साहित्य की विविध विधाओं पर लेखन करके एक तरह से मराठी साहित्य को समृध्द बनाया है। उनका साहित्य केवल मराठी भा ाा तक ही सिमित नहीं रहा बल्कि १४ भारतीय भा ााओं में —हिंदी ,गुजराती,उडिया,तमिल मल्यालम.....तथा जर्मन अंग्रेजी,झेक,फ्रेंच पोलीश रशियन आदि विदेशी भा ााओं में भी अनुवादित हुआ। उनका साहित्य जात,धर्म,देश भा ाा आदि बंधनों से मुक्त रहा है क्योंकि उन्होंने अपने साहित्य में मनु य पर होनेवाले अन्याय—अत्याचार के विरूध्द आवाज उठाई है। स्वातंत्र, समता, न्याय व बधुंता इन मानवीय मूल्यों की प्रति ठा की है । 'फकिरा का संघ ि केवल लूट तक ही सिमित नहीं है बल्कि न्याय के लिए संघ ि करते हूए दिखायी देता है' । उनका लेखन सामाजिक एवं राजकीय दृ ि ट से अनुभव पर आधारित

था उन्होंने ोि ात, दलित जनता के दु:खों को पाठक वर्ण तक पहुचाने का कार्य बखुबी निभाया । इस संदर्भ में अण्णा भाऊ साठे कहते है –

'' तु गुलाम नाहीस तर तु
या वास्तव जगाचा
निर्माता आहेस ''

अण्णाभाऊ ने १६ अगस्त १९४७ को अर्थात स्वतंत्रता के दूसरे हि दिन मुंबई में रैली निकाली,उसमें भाऊ घो ाणा देते है–

'' ये आझादी झुठी है,
देश की जनता भरणी है।''

अर्थात भाऊ को यह बात समजमें आ गई थी कि आझादी मिलने के पश्चात भी किसान और मजदूर वर्ग की परिस्थिती में कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ है।आझादी का उपभोग सही मायने में सत्ताधारी वर्ग ही ले रहा था इस बात से भलीभांति परिचित थे। स्वंय के दुखों का विचार न करते हुए गरिबों के वंचितो के व्यथाओं को प्रखरता के साथ अभिव्यक्त करनेवाले लोकशाहीर ,भीमशाहीर व शिवशाहीर साठे ने रा ट्रीय स्वातत्रंता आंदोलन,संयुक्त महारा ट्र का आंदोलन व गोवा मुक्ति संग्राम के संदर्भ में जनजागृति करके अपनी भूमिका अदा की ।

दलित साहित्य का अग्रदूत अण्णाभाऊ साठे दलित साहित्य संम्मेलन के अवसर पर अपने भा ाण में कहा– ''दलितों को मुक्त कराने और उनकी रक्षा करने की जिम्मेदारी से जुडा हूँ । क्योंकि लम्बे समय तक पारम्परिक मान्यताओं को तुरन्त न ट नही किया जा सकता है।''

उपरलिखित बात में भी भाऊ की मानवतावादी दु ि ट नजर आती है। १९५७ के प्रथम दलित साहित्य संम्मेलन में अण्णाभाऊ कहते है– ''यह धरती ो ानाग के सिर पर नहीं बसी है,बल्कि यह किसान दलित मजदूरो के हथली पर खडी है!'

अर्थात इस पृथ्वि पर जो कुछ विकास दिसायी देता है उसका पूरा श्रेय किसान ,दलित मजदूररों द्वारा किए गए श्रम को दिया गया । साहित्यरत्न अण्णाभाऊ पर आंबेडकरी विचारों का प्रभाव रहा है,यह बात स्वयं साहित्यसम्राट कहते है–

''एक ही प्रहार से बदल इस दुनिया को ऐसा कह गए भीमराव''

" निळया रक्ताची धमक बघ,

स्वाभिमानाची आग आहे.

घाबरून नकोस कुणांच्या बापाला,

तु भीमाचा वाघ आहे"

यहा भाऊ समाज को स्वाभिमान की शिक्षक देते है,साथ –साथ यह बात भी स्प ट करते है कि स्वाभिमानी इन्सान ने कभी भी किसी बात से घबराना नहीं है । जैसे भीमराव आंबेडकरने हर स्थिती में अपना स्वाभीमान कायम रखते हूए आनेवाली परिस्थिती से दो हाथ किए,हर संकट का सामना किया,न डरते हूए परिस्थितियों को संभाला ऐसे ी हे मनु य तुझे भी करना है इस तरह का दिलासा देते है । युगप्रर्वतक अण्णा भाऊ के साहित्य की स्त्री स्वाभिमानी,स्त्री प्रश्न के प्रति सजग,सन्मान तथा आत्मविश्वास के प्रति जागृत दिखायी देती है । अपने ो ाण के प्रति सचेत दिखायी देती है।

अण्णा भाऊ की दृ ि ट स्त्री के प्रति अत्यंत व्यापक रही है । तत्कालीन समय में हिंदू संस्कृति में स्त्री के प्रति कनि ठता के भाव रखे हूए थे इसलिए अण्णाभाऊ की लेखणी स्त्रियों के अन्याय के विरूध्द चलती है । स्त्री–पुरू ा समानता का पुरस्कार करते है । हिंदू धर्म की रूढी परंपरांओ की तोडती हूई नायिकाओं का चित्रण अपने साहित्य मे किया है । स्त्री के जीवन सम्बन्धि प्रश्नों को अपने साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है । इन उपन्यासों की स्त्री पात्रों के माध्यम से स्त्री के मन का अलग ही दु ि ट समाज के सामने प्रस्तुत की । 'वैजयता,यह स्त्री तमाशा में नृत्यु करनेवाली है,परंतु उसकी भी उपनी इज्जत है। वह न किसी से इरती है,स्वभाव से जिद्दी है,अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थिती में वैजयता अपने माँ के उपमानों का बदला लेती है,उसके लिए लढती भी है,आखिर उसमें उसकी जित होती है। 'आवडी'उपन्यास की नायिका आवडी की ाादी होती है,बाद में उसे पता चलता है कि उसे फसाया गया है,परंतु परंपराओं को तोडते हूए एक स्वाभिमानी और क्रांतिकारी स्त्री के रूप में भाऊने उसका चित्रण किया है।

'चंदन' उपन्यास की चंदन अत्यन्त सुदंर विधवा स्त्री जो झोपडपट्टी में रहती है। दयाराम उसका बलात्कार करना चाहता है उसकी इस क्रिया को देखते ही उसके ारीर पर ॲसिड का डिब्बा फेकती है इस तरह चंदन एक लढाऊ ,शील की रक्षा करनेवाली चंदन समाज के सामने एक आदर्श प्रस्थापित करती है। अण्णाभाऊ ने एक प्रकार से अपने साहित्य कि माध्यम से 'स्वाभिमानी ,देशभक्त आत्मविश्वासी,संघ मियी व पराक्रमी आदि गुणों से युक्त स्त्रींओं का चित्रण किया गया है। 'वारणेच्या

खो–यात' इस उपन्यास की नायिका तो प्रेमभक्ति की तुलना में देशभक्ती को महत्व देते हूए दिखायी देती है ।

संक्षेप में इतना ही कना चाहूँगी कि अण्णा भाऊ साठे अपने आप में एक महान संवेदनशील व्यक्ती थे,जिन्होंने समाज के प्रति अपने दायित्व को भलीभाँति निभाया है। अपने साहित्य के माध्यम से मानव मुक्ति का विचार व्यक्त किया है। ''अपनी रचनाओं में उन्होंने ऐसे नायकों का निर्माण किया जो रूढि–प्रथाओं को तोडने का काम करते है। स्त्री के प्रति आदर और सम्मान का भाव रखते है तळा स्त्रीओं के हक और अधिकारों के लिए लडते हूए दिखाई देते हे।''

आज भी अण्णा के विचार प्रांसगिक है।अण्णा का साहित्य कालजयी है। मानव आज भी उनके साहित्य का अध्ययन करके अपनी समस्याओं का हल निकाल सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

१) सत्यशोधक अण्णा भाऊ साठे : मानवतावादी विचारवंत–संपादक–डॉ.मनोहर सिरसाट,मोरे,राजपंखे प्रकाशक–शौर्य पब्लिकेशन प्रथम संस्करण–१ आक्टोबर,२०१८

२) फकिरा–अण्णाभाऊ साठे

३) चंदन–अण्णाभाऊ साठे